अपना लहू बहाया है! अब आपको शैतान का गुलाम बने रहने की आवश्यकता नहीं है। आप यीशु से कह सकते हैं कि वह आपके जीवन में वास करे। वह आपको पाप और अपराध से छुड़ाएगा। वह आपको आनन्द से भर देगा। इस संसार में और आनेवाले संसार में भी आप परमेश्वर की संगति में रह सकते हैं!

क्या आप यीशु को अपने जीवन में आने का निमन्त्रण नहीं देंगे? अभी प्रार्थना कीजिए: *"यीशु, मेरी खातिर क्रूस पर मरने के लिए आपको धन्यवाद। मेरे पापों से मुझे शुद्ध कीजिए। मुझे शैतान और पाप से आजाद कीजिए। मुझे अपना घर बनाईए। आप मेरे प्रभु हैं... इस संसार में और आनेवाले संसार में भी... आमीन!"*

साजू जॉन मेथ्यू

visit: www.sjmathew.com

हो सकता है आप इस विषय में अधिक जानना चाहते हों। हमें फोन करने में संकोच मत कीजिए। हम व्यक्तिगत रूप से आपसे मुलाकात करने और इस विषय पर अधिक बातचीत करना चाहते हैं कि किस प्रकार आप अधिक आत्मिक उन्नति प्राप्त कर सकते हैं।

मोबाईल:

पा. एस. एस. दीप - 094252 48285

email: jesusmission@gmail.com

साँक्चुअरी वर्ड मीड़िया,

पोस्ट बॉक्स - 27, बिलासपुर, छ. ग.

1,00,000 रुपये की चिड़िया

एक व्यक्ति सड़क पर खड़ा था और एक चिड़िया का तमाशा दिखा रहा था।

आईये ध्यान से देखें। वह एक भयानक दृश्य था। किसी भी प्रकार उसे उचित नहीं कहा जा सकता था। यह व्यक्ति निर्दयता पूर्वक बेचारे पक्षी के पंखों को उखाड़ फेंक रहा था... असहाय पक्षी की किटकिटाहट उस व्यक्ति के कानों तक नहीं पहुँच रही थी। उसके असहाय शिकार की किस्मत उसका मनोरंजन कर रही थी।

"अरे, तुम क्या कर रहे हो?" एक सज्जन ने पूछा।

"तुम्हें दिखाई नहीं देता? मैं इसके पंख उखाड़ रहा हूँ जिससे इसको बहुत दर्द हो रहा है। मुझे पक्षियों की दर्दभरी चीख सुनना अच्छा लगता है। मेरे घर में एक बिल्ली है। जब मैं इस पक्षी के पूरे पंख निकाल लूँगा, तब मैं इसे अपनी प्यारी बिल्ली के सामने डाल दूँगा। मेरी बिल्ली स्वादिष्ट भोजन का आनंद उठाएगी।" वह व्यक्ति सड़क पर ही नाचने लगा।

"अरे भाई, उस पक्षी को छोड़ दो। चिड़ियों का जन्म ही उड़ने के लिए होता है।" उस सज्जन की आवाज बेहद कोमल थी।

"फिर से कहो।" वह व्यक्ति उस सज्जन की ओर देख कर गुर्राने लगा। पक्षियाँ आकाश में उड़ सकती हैं। लेकिन एक बार जब वे मेरे फन्दे में फँस जाती हैं तब वे मेरी हो जाती हैं। तब मैं उनकी मंजिल तय करता हूँ। वह हँसने लगा।

"अरे भाई!" उस सज्जन ने उसके पास जाकर कहा "हाँ, क्या तुम इस पक्षी को बेचना चाहोगे?"

"बेचना?" वह व्यक्ति शंकालु हो उठा।

"क्यों? यह चिड़िया गाती नहीं है। यह गन्दा है और किसी भी व्यर्थ वस्तु के समान है...।"

"इससे तुम्हें क्या? यदि तुम इसे बेचोगे तो मैं मुँह माँगी कीमत दूँगा।"

"कोई भी कीमत? तुम मुझे 1,00,000 रुपये दो।"

"ठीक है... दूँगा।"

इस जंगली चिड़िया के लिए 1,00,000 रुपये! उसे विश्वास नहीं हो रहा था। आस-पास के लोगों के समान वह भी चकित था।

उस व्यक्ति ने एक लाख रुपये गिनकर उसके हाथों में रख दिए और पक्षी को उठाया, उसे चूमा, और उसे आसमान में उड़ा दिया। और सबको आश्चर्य में डालते हुए वहाँ से चलता बना।

आप कहेंगे, "अरे, यह तो कहानी की बात है। एक जंगली चिड़िया के लिए कोई भी अपने होशोहवास में इतनी बड़ी रकम नहीं लुटाएगा।" हो सकता है आप सही हों, परन्तु विश्वास कीजिए अदृश्य संसार में कुछ ऐसा ही हुआ था। मैं और आप परमेश्वर के स्वरूप और समानता में बनाए गए थे, उसकी पवित्र उपस्थिति के आनन्द उठाने के लिए स्वतन्त्र थे। हालाँकि, हमने परमेश्वर का इन्कार किया और स्वयं ही अन्धकार की ओर उड़ चले और परमेश्वर की उपस्थिति का आत्मिक आनन्द के बजाय पाप के आनन्द का चुनाव किया है। अपनी देह को सन्तुष्ट करने के लिए हमने लालच किया, शत्रुता की, छीना-छपटी की, परमेश्वर की निन्दा की, लड़ाइयाँ और हत्याएँ की... हम यह समझने से चूक गए कि पाप का हर एक आनन्द शैतान का फन्दा था जिसने हमें उसके जाल में फँसा दिया। जब तक हम इस बात को समझते तब तक बहुत देर हो चुकी थी... हम बन्धन में पड़ चुके थे!

मैं शैतान के हाथों में एक खिलौना था। अपने चाबुक से शैतान मुझे यातनाएँ देता था और बचने का कोई रास्ता नहीं था! मेरी चिल्लाहट यीशु के कानों तक पहुँची और वह उतर आया... उस गड्ढे तक जहाँ मैं पड़ा था - शैतान की कैद में उसका कैदी बनकर।

"अरे, तुम उसके साथ क्या कर रहे हो?" यीशु ने पूछा।

"क्या तुम्हें दिखाई नहीं देता?" शैतान बौखलाया। "मैं सभी मनुष्यों के साथ यही काम करता हूँ। मैं उन्हें यातनाएँ देता हूँ, उनका आनन्द छीन लेता हूँ, उनके परिवारों को तोड़ देता हूँ, उनसे दंगे करवाता हूँ, जुआ खिलवाता हूँ, शराब पिलाता हूँ, व्यभिचार करने देता हूँ, उन्हें क्रोधित करता हूँ, लड़ाई करवाता हूँ, हत्याएँ करवाता हूँ, आत्महत्याएँ करवाता हूँ, उन्हें शर्मिन्दगी और दुःख दर्द में डालता हूँ। उन्हें नाश होते हुए देखने में मुझे आनन्द आता है।"

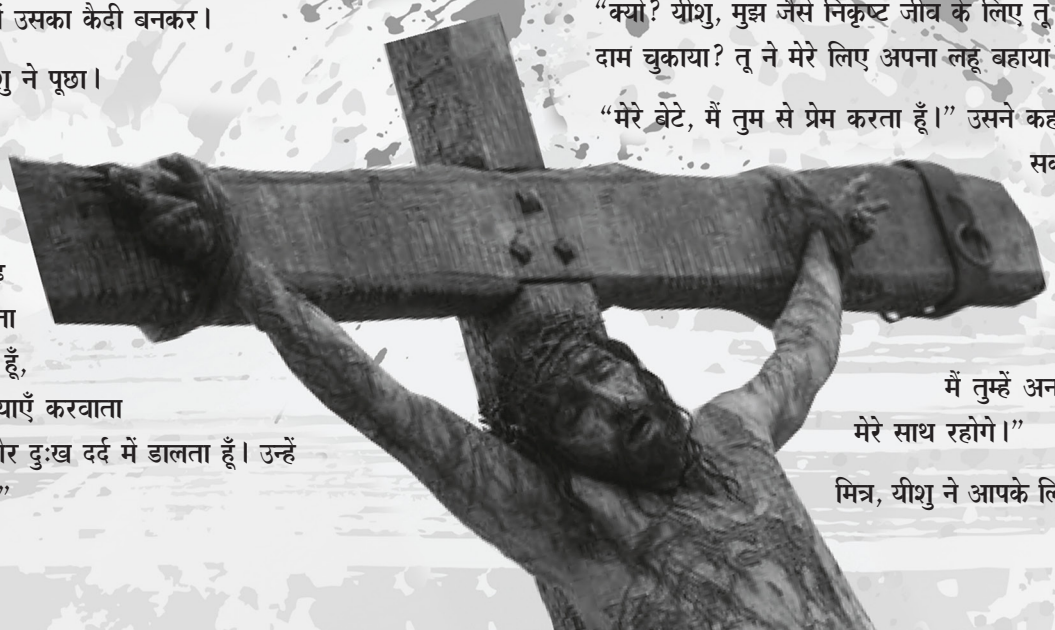

"अरे, वे परमेश्वर की समानता में सृजित लोग हैं! तुम्हें उनसे क्या मतलब?" यीशु ने पूछा।

"ओह! यह एक पुरानी कहानी है।" शैतान ने कहा। "परमेश्वर ने अपने लिए उनकी सृष्टि की परन्तु वे लालची... आनन्द के चाहनेवाले थे! मैंने उनकी अभिलाषाओं - आँखों की अभिलाषा, देह की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड - को पूरा किया। मैंने उन्हें पाप के फन्दे में फँसा दिया और अब वे मेरे हैं!" शैतान हँसने लगा।

"क्या तुम उन्हें बेचना चाहते हो, ताकि मैं उन्हें परमेश्वर के लिए छुड़ा सकूँ?" यीशु ने पूछा।

"अरे! तुम उन्हें क्यों बचाना चाहते हो? तुम जानते हो कि वे विद्रोही हैं। उन्होंने स्वयं ही परमेश्वर का इन्कार किया था और अपने स्वामी के रूप में मुझे चुना था। और तो और अब वे उस स्वरूप और समानता में नहीं हैं जिनमें वे सृजे गए थे... मैंने उनका स्वरूप बिगाड़ दिया है। तुम क्यों उन्हें छुड़ाना चाहते हो?"

"इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं है। यदि तुम उन्हें बेचोगे तो मैं कुछ भी दाम देने के लिए तैयार हूँ।"

"कोई भी दाम?" शैतान मोलभाव करने के लिए अपने आपको तैयार कर रहा था। "ठीक है, मैं दाम बताता हूँ...।" शैतान अपनी असलियत में उतर आया। "तुम्हारा लहू...। मुझे तुम्हारा लहू चाहिए।"

यीशु ने मेरी ओर देखा। मैंने उसकी आँखों में प्रेम और तरस देखा। "ठीक है।" उसने कहा।

यीशु को मरना था ताकि मुझे पाप से, शैतान से, अपराधबोध से और अनन्त नरक से छुड़ाए। "क्यों? यीशु, मुझ जैसे निकृष्ट जीव के लिए तू ने क्यों अपने प्राण दिए? तू ने क्यों इतना बड़ा दाम चुकाया? तू ने मेरे लिए अपना लहू बहाया?"

"मेरे बेटे, मैं तुम से प्रेम करता हूँ।" उसने कहा। "मैं तुझे नरक की ओर जाते हुए नहीं देख सकता हूँ। मेरे साथ रहने के लिए मैंने तुम्हारी सृष्टि की है। मैं चाहता हूँ कि तू मेरा घर बने। मैं चाहता हूँ कि इस संसार में भी मेरी संगति में तुम अपने जीवन का आनन्द उठाओ। और जब तुम अपने जीवन यात्रा पूरी कर चुको तब मैं तुम्हें अनन्त स्वर्ग ले जाऊँगा, जहाँ तुम हमेशा के लिए मेरे साथ रहोगे।"

मित्र, यीशु ने आपके लिए मूल्य चुकाया है... कलवरी के क्रूस पर उसने